

माँ

जब मैं बच्चा था, हर बार जब तुम किसी को मेरे जन्म के बारे में बताती थीं, तुम हमेशा उसी सवाल से शुरू करती थीं जो तुमने मेरी पहली किलकारी सुनते ही पूछा था: “क्या वह स्वस्थ है?” और सालों तक मुझे लगता रहा कि बच्चे दुनिया में टुकड़ों में आते हैं, जैसे खिलौने जिन्हें जोड़ना पड़ता है। लोग हंसते थे जब मैं यह कहता था। फिर हम सब बड़े हुए और पाया कि यह सच था।

पहले एक शरीर आता है जो बढ़ता है। फिर एक शक्ति जो विकसित होती है। फिर एक मस्तिष्क जो हमें याद दिलाता है कि हमारे माता-पिता कौन हैं।

तुम और मैं... शुरू से ही संघर्ष थे। मुझे यह समझने में पाँच साल लगे कि हम हमेशा बंटे रहेंगे। तुम सोचती थीं हम एक जैसे थे। पर मेरा आधा हिस्सा तुम नहीं था — वह मेरे पिता थे।

मैंने तुमसे प्यार नहीं किया क्योंकि तुमने मुझे कभी नहीं सिखाया कि प्यार कैसे काम करता है। मैंने तुमसे नफ़रत नहीं की क्योंकि मेरे डीएनए में वह कोड नहीं था। पर मैंने साठ सालों तक तुम्हारा गुस्सा ढोया, और कुछ महीने पहले मैंने उसे तुम्हारी क़ब्र पर तुम्हें लौटा दिया।

आज मातृ दिवस है। एक ऐसा दिन जिसे दुनिया हज़ार चीज़ों के लिए “धन्यवाद” कहने के लिए इस्तेमाल करती है। पर कृतज्ञता सिर्फ़ एक शब्द है — बाकी सब तथ्य हैं।

तो, मैं तुम्हें दूर से मनाता हूँ। कोई नाराज़गी नहीं। किसी माफ़ी की ज़रूरत नहीं। क्योंकि मैं आखिरकार एक बात समझ गया: जो तुमने मुझे नहीं दिया, वह तुम्हारे पास था ही नहीं — और तुम्हें पता नहीं था कि उसे कहाँ पाया जाए। तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हें कभी वह मशाल नहीं सौंपी।

मैं तुम्हें यह छोड़ता हूँ जहाँसे भी तुम मुझे पढ़ रही हो: हर उस पल की स्मृति जब मैंने तुम्हें मुस्कुराया। क्योंकि तुम हमेशा मानती थीं कि मैं कोई अप्रत्याशित हूँ। पर मैं नहीं था। मैं बस तुम्हारा छोटा बेटा था।

अलविदा, माँ।

नान्दो

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com